IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, July 2024

हरिशंकर परसाई जी की व्यंग्य विधाओं का स्वरूप और वैशिष्ट्य

पूनम पाठक
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
अ. प्र. सिंह वि. वि., रीवा

हिन्दी के बहुत से प्रसिद्ध साहित्य के विपरीत परसाई केवल गद्य लेखक हैं। अर्थात् वे जो कुछ कहना चाहते हैं, वह गद्य के माध्यम से ही कहते हैं। कविता लिखने वाला तो गद्य में पहुँच जाता है पर बहुधा ऐसा कम ही होता है कि गद्य लेखक को अपनी बात कहने के लिए गद्य छोड़कर काव्य का आश्रय लेना पड़े। वास्तव में गद्य आधुनिक युग का माध्यम है इस माध्यम की जो अनेक विधाएँ हैं उसमें उपन्यास को प्रायः बीसवीं शताब्दी की विधा कहा जाता है पर परसाई जी ने अपने लेखन के आरम्भिक दौर में उपन्यास लिखे, पर उस विधा को उन्होंने लगभग अपर्याप्त पाया और लगभग क्या पूरी तरह छोड़ दिया।

सन् 1955 ई0 के बाद उन्होंने कोई उपन्यास नहीं लिखा, परसाई जी ने विशिष्ट कहानियॉ भी लिखी और नई कहानी के दौर में उन्हें बहुत दिनों तक नये कहानीकारों में परिगणित किया जाता रहा और एक तरह से उन्हें नई कहानी आंदोलन के प्रारम्भकर्ताओं में से एक होने का श्रेय भी दिया जाता है। परसाई की कहानियॉ इस अर्थ में नयीं थी कि उन्होंने स्वतंत्रता के बाद उत्पन्न होने वाले मोहभंग को सबसे पहले पहचाना था घोषित और विघटित मूल्यों को आजादी के बाद की पीढ़ी के कहानीकारों में सबसे पहले रेखांकित किया था। परसाई जी वैसे किस्सा गो नहीं है जेसे प्रेमचंद हैं, न ही वे यशपाल की तरह कहानी का ताना–बाना बुनकर किसी मूल्य को सिद्ध करने की कला में पारंगत हैं। परसाई जी अपने किसी 'आब्जरवेशन' को प्रमाणिकता ओर उद्घाटित करने के लिये कहानी लिखते हैं लेकिन धीरे–धीरे परसाई जी कहानी कला भी अपने लिये अधूरी और अपर्याप्त जान पड़ने लगी–क्योंकि परसाई, प्रेमचंद की तरह से अपनी कहानियों में 'कैरेक्टरर्स' खड़े नहीं करते उनका आब्जरवेशन उनकी कहानियों के विस्तार में खो जाता है और कथ्य की धार भी थोड़ी मंद सी पड़ जाती है।

परसाई जी भारतीय जनता की पीड़ा और त्रास और शोषण और उसके विरूद्ध रचे जा रहे षडयंत्र के खिलाफ खड़े हैं और इसके लिये उन्हें निबन्ध की विधा ज्यादा उपयोगी और कारगर लगी, परसाई जी उपन्यास को छोड़कर कहानी की ओर आये और कहानी छोड़कर उन्होंने निबन्ध को अंगीकार किया और अंततः निबन्ध को भी छोड़कर स्तम्भ लेखन शुरू किया। सच पूछा जाय तो उपन्यासों को छोड़कर परसाई जी का समूचा गद्य लेखन निबन्ध का ही परिवर्तित संशोधित अथवा परिष्कृत रूप है उनका स्तम्भ लेखन भी एक तरह से निबन्ध में ही थोड़े से प्रत्यय–उपसर्ग जोड़कर बनाया गया साहित्य रूप है।

परसाई रचनावली के तीसरे खण्ड में परसाई जी के लगभग पचास निबन्ध संकलित है। बानगी के लिये हम केवल पाँच निबन्ध ही चुनेंगे, जिनके माध्यम से परसाई जी के निबन्ध लेखन की महत्ता और स्वरूप को समझा जा सके। ये निबंध इसी प्रकार हैं कंधे श्रवण कुमार के, 'अन्त की मौत, 'आँगन में बैगन', गेहूँ का सुख' और 'पहिला सफेद बाल।' एक तरह से ये पाँचों ही निबन्ध परसाई जी के निबन्ध लेखन की परिव्याप्ति का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। परम्परा और वर्तमान, नीति और राजनीति, परिवार, और समाज, प्रशासन के घोषित और व्यवहारिक स्वरूप सभी कुछ परसाई जी इन निबन्धों में समेट लेते है। घटना तो परसाई जी के लिये केवल केटेलिक एजेन्ट' का काम देती है कहना तेा उन्हें वही है जो वे कहना चाहते है।

कन्धे श्रवण कुमार के में श्रवण कुमार के माध्यम से परसाई जी पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के निबन्धों की ही पड़ताल नहीं करते बल्कि उन दोनों की बनावट की भी पड़ताल करते है। पुरानी पीढ़ी प्रश्न पूछने से कतराती है क्योंकि प्रश्न पूछने से जो उत्तर प्राप्त होगे वे बहुत सुविधाजनक नहीं होगे। पुरानी पीढ़ी के बिना प्रश्न पूछे ही सब कुछ स्वीकार कर लेने की मानसिकता के संबंध में परसाई का निष्कर्ष है कि हम सब गलत किताबों की पैदावार है ये सवालों को मारने की किताबें थी। पर

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, July 2024

नई पीढ़ी की किताबें बदल गई हैं, सोच और समझ भी बदल गई हैं और विश्वासों के प्रति दोनों पीढ़ियों में कोई तालमेल की गुंजाइश नहीं रही। परसाई जी लिखते हैं कि एक पीढ़ी के विश्वासों के लिए दूसरी पीढ़ी क्यों चीरी जाये।[1]

''कितनी काँवड़े हैं–राजनीति में, साहित्य में, कला में, धर्म में, शिक्षा में, अन्धे बैठे है और आंख वाले उन्हें ढ़ो रहे है। अन्धों में अजब काइयाँपन आ जाता है। वह खरे और खोटे सिक्कों को पहचान लेता है। पैसे सही गिन लेता है। उसमें टटोलने की क्षमता आ जात है। वह पद टटोल लेता है। आँख वाले जिन्हें नहीं देख पाते, वह उन्हें टटोल लेता है।

'आंगन में बैगन' यह परसाई के प्रारम्भिक लेखन के दिनों का निबन्ध है यहाँ राजनीति के स्थान पर भारतीय मध्यवर्गीय परिवार की वस्तुओं के मोह की मानसिकता ही प्रमुख है एक तरह से सम्पन्नता के प्रदर्शन का जो अभ्यास मध्यवित्त परिवार के संस्कारों का अंग बन गया इस निबन्ध का मूल लक्ष्य है।[2] आंगन में बैगन के बहाने परसाई विवाह प्रथा, दाम्पत्य संबंध और जिसे डोमिस्टिक प्रासीट्क्यूशन कहा गया उन सबकी जांच पड़ताल इस निबंध में करते हैं।

इस निबंध में परसाई के लेखन की वह चुस्ती नहीं है जो बाद के निबंधों में पाई जाती है। गुलाब और बैंगन या बबूल और गेंदा का उल्लेख पूरे निबंध के कथ्य के साथ मेल नहीं खाता। वह आरोपित है। इस निबंध में अनेक ऐसे वैयक्तिक प्रसंग भी है जो पूरी तरह साधारणीकृत नहीं हो पाते पर ये उस निबंधकार परसाई की आलोचना है जो अभी अपने लिये विधा का संधान कर रहे हैं। धीरे–धीरे परसाई अपने कथ्य के लिये निबंध का उपयोग ऐसे हस्तलाघव से करते हैं जैसे कोई डॉक्टर अपने स्टेथिसकोप को पकड़ता है ठीक जगह पर ठीक धड़कन सुनने के लिये।

परसाई जी इस निबंध के बीच–बीच में सुभाषित भी लिखते चलते हैं और सुभाषित परसाई के अनुभव, चिंतन और दृष्टि का निचोड़ है।

'अन्न की मौत' निबन्ध में कालाबाजारियों, आयातित गेहूँ और जिलाबन्दी जैसे प्रशासनिक कार्यो की जाँच पड़ताल की गई है वह भी पूरी गम्भीरता के साथ। आग से भरे पूरे को केक की उपमा परसाई ही दे सकते है सम्पन्नों के लिये केक काटने में जो आनंद मिलता है वही आनंद सामान्य मनुष्य के लिये आटे का थैला खोलने में। पर परसाई इसी निबंध की लपेट में पी. एल. 480 में भारत में आने वाली अमरीकी–सड़े गेहूँ को भी ले लेते हैं और प्रशासन और कालाबाजारियों की उस साठ–साठ को भी उजागर करते हैं, जो जानबूझकर, कृत्रिम अभाव उत्पन्न करते हैं। परसाई जी लिखते है कि ''सोचा'', जितनी मेहनत परमिट लेने में लगायेंगे, उतनी मेहनत से तो घर के सामने के मैदान में फसल खड़ी कर लेंगे।'' हजारों मील दूर अमरीका से पटाया गेहूँ तो आ सकता है पर 150 मील दूर से अपना गेहूँ नहीं आ सकता। अपनी हर चीज की सफ्तार कम हो गयी है। विदेशी पैसा कैसे दौड़कर आता है, अपना पैसा के लिए नहीं काला बाजार में बेचने के लिए ले जा रहे है तो आ जाने दिया जाता है।''[3]

गेहूँ का सुख परसाई जी के प्रतिनिधि निबंधों में से एक है। इस निबंध के माध्यम से शोषितों और दलितों के प्रति परसाई की पक्षधराता स्पष्ट हुई है। वे इसमें उस छद्म को भी अनावृत्ति करते हैं जो भौतिक सुखों को हेय या जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की अपेक्षा की दृष्टि से देखते है। वे जीवन दर्शन के भी वे दो भेद कर देते है एक तो वह जीवन दर्शन जो भरे पेट से पैदा होता है एक वह जीवन दर्शन जो खाली पेट से जन्म लेता है।''[4]

हिन्दी साहित्य में कम प्रचलित विधाओं में, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि को वह महत्व प्राप्त नहीं हो सका, जिस तरह का महत्व कविता, कहानी, उपन्यास विधा को प्राप्त है। लेकिन इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी

[1] परसाई रचनावली, खण्ड–3, पृ0 18
[2] परसाई रचनावली, खण्ड–3, पृ0 07
[3] परसाई रचनावली, खण्ड–3, पृ0 91–92
[4] ऑखन देखी, पृ0 291

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, July 2024

साहित्य में इस विधा का अपना एक स्वतन्त्र अस्तित्व है। जीवन में प्रचलित और स्वीकृति मानदंडों से अलग जब किसी मनुष्य में कुछ विलक्षणता अथवा अद्वितीयता, एक ऐसा वैशिष्ट्य जो आस–पास संसार में और कहीं रेखांकित न किया जा सके तभी वह रेखाचित्र के योग्य बन सकता है। लगभग दो दशक पहले डॉ0 विश्वम्भरनाथ उपाध्याय ने हिन्दी में रेखाचित्र और रिपोर्ताज लेख में रेखाचित्र के संबंध में लिखा था कि–

''इस प्रकार के कथन प्रायः सुनाई पड़ते हैं फिर भी साधारण से साधारण व्यक्तियों में कुछ अद्वितीयता होती है। प्रत्येक व्यक्ति इस अर्थ में अद्वितीय होता है और इस दृष्टि से एक सामान्य सांचे के भीतर ढला हुआ होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति कुछ स्तरों पर विलक्षण होने के कारण रेखाचित्र का विषय बन सकता है। उपन्यासों, कथाओं में रेखाचित्रों का बहुत अधिक प्रयोग होता है। प्रत्येक उपन्यास के ये रेखाचित्रात्मक स्तर वर्णित वस्तु या व्यक्ति को वाणी देते हैं। रेखाचित्र द्वारा वस्तु और व्यक्ति सवाक हो उठते हैं, उनकी असाधारणता स्पष्ट होती है। अतः रेखाचित्र प्रचलित और स्वीकृति साचों के मध्य व्यक्ति के गौरव का, सौन्दर्य और आकर्षण का, वैविध्य और महिमा का आकलन बन जाता है। रेखाचित्र यह सिद्ध करते हैं कि प्रत्येक अस्तित्व में सामान्य और विशिष्ट की एक संगति रहती है। इस प्रकार एक बहुत बड़ा सत्य रेखाचित्र लेखक अनजाने ही हमारे सम्मुख प्रकट करता है।''

अतः हम यह कह सकते है कि स्वतंत्रता के बाद हमारे जीवन–मूल्यों के विघटन का इतिहास जब भी लिखा जायेगा तो उस समय परसाई साहित्य संदर्भ महत्वपूर्ण सामग्री का काम करेगा। हरिशंकर परसाई समसामाजिक हिन्दी साहित्य के सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले लेखक है। वे केवल साहित्यकार की हैसियत से ही गंभीरता पूर्वक नहीं पढ़े जाते बल्कि पने समय, समाज और देश को जानने और समझने के लिए भी उनको पढ़ना जरूरी माना जाता है। एक तरह से जो परसाई को नही पढ़ता वह अपने समय और समाज और देश की वास्तविकता को जानने का दावा नहीं कर सकता। परसाई जी ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए जिन विधाओं का चुनाव किया है उससे लगता है कि वे इन विधाओं के जरिये अपनी व्यंग्य की स्पिरिट को एक नया आकार प्रदान करना चाहते हो। वास्तव में देखा जाय तो परसाई जी का महत्व उनकी दृष्टि की सम्पूर्णता में निहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. व्यंग्य क्या, व्यंग्य क्यों – श्याम सुन्दर घोष, सत्साहित्य प्रकशन, नई दिल्ली, 1957।
2. हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग चेतना – कु0 आभा भट्ट, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1994।
3. लोक साहित्य की भूमिका – डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, प्रा0लि0, इलाहाबाद, 2004।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली नवीन संस्करण 2005।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, वाराणसी, सत्रहवॉ पु0मु0 संवत् 2029।
6. व्यंग्य का सौन्दर्यशास्त्र – मलय, साहित्यवाणी, इलाहाबाद, 1983।
7. हरिशंकर परसाई की दुनिया – नगेन्द्र, साहित्य वाणी, इलाहाबाद, 1985।
8. हरिशंकर परसाई : व्यक्तित्व और कृतित्व – मनोहर देवलिया, साहित्य वाणी, इलाहाबाद, 1986।